**Academe** *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
*Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December)* *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
*PP: 434-438* *Journal Website www.academejournal.in*

# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में छायावादी काव्यधारा की प्रासंगिकता

**डॉ. नन्दनी कुमारी**

पूर्व शोध-प्रज्ञा

विश्वविद्यालय-हिन्दी-विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार

**सारांश:-**

छायावादी साहित्य के कला और भाव-क्षेत्र में एक महान आंदोलन है, जिसकी सर्वप्रमुख भावना आधुनिक औद्योगिकता से प्रेरित व्यक्तिवाद है। हिन्दी साहित्य की प्रस्तुत काव्यधारा अपने आप में मौलिक और स्वतंत्र है। कुछ आलोचकों ने छायावाद को पाश्चात्य साहित्य की रोमांटिक धारा तथा बंगला साहित्य का अनुकरण मात्र कहा है, किन्तु यह नितान्त असमीचीन है। इस काव्य-धारा का अपना जीवन-दर्शन है और यह यहाँ की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की अनुरुपता में प्रस्फुटित हुई है। यह केवल एक अन्य भाव-प्रतिक्रिया ही नहीं है, बल्कि जीवन और जगत के प्रति एक निश्चित और मूलभूत दृष्टिकोण भी है।

**प्रस्तावना:-**

डॉ. शिवदान सिंह चौहान लिखते हैं– "यह कहना जैसे गलत होगा कि फ्रांसीसी धारा, जर्मन धारा के अनुकरण पर चली या अंग्रेजी धारा, फ्रांसीसी धारा की अनुवर्तिनी थी, उसी तरह यह कहना भी गलत होगा कि हिन्दी छायावादी कविता पाश्चात्य धारा की नकल है और यदि फैशन की नकल की जाती है तो तत्कालीन समसामयिक फैशन को सौ वर्ष पुराने फैशन की नहीं! किन्तु उस स्वच्छन्दतावादी धारा का जिससे छायावाद की कविता प्रभावित है, सत्तर वर्ष पहले अवसान हो चुका था और प्रथम महायुद्ध के बाद की पाश्चात्य कविता स्वच्छन्दतावाद के अवशिष्ट हासोन्मुख, घोर व्यक्तिवाद, अनास्थावादी और असामाजिक तत्वों को ही एकांगी अभिव्यक्ति दे रही थी। छायावादी यदि सहसा उनकी परिपाटी पर चल पड़ते तो उन पर अनुकरण वृत्ति का आरोप सही उतरता।"[1] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कहना है कि बंगला में प्रतीकात्मक आध्यात्मवादी रचनाओं को छायावादी कहा जाता था, अतः इसके अनुकरण पर हिन्दी-साहित्य में ऐसे रचनाओं के लिए छायावाद नाम चल पड़ा, किन्तु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है कि बंगला में छायावादी नाम कभी चला ही नहीं। मुकुटधर पांडेय ने सर्वप्रथम व्यंग्यात्मक रूप (कविता न होकर उसकी छाया है) में शब्द का स्वच्छन्तावादी नवीन अभिव्यक्तिमय रचनाओं के लिए प्रयोग किया जो कि बाद में इस कविता के लिए रुढ़ हो गया और स्वयं स्वच्छन्दतावादी कवियों ने इसे अपना लिया। जयशंकर प्रसाद इस सम्बन्ध में लिखते हैं– "मोती के भीतर छाया जैसी तरलता होती है वैसे ही क्रांति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है, छायावाद भारतीय दृष्टि से अनुभूति अभिव्यक्ति की भंगिमा पर निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक-विधान तथा उपचारवक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएँ हैं। अपने भीतर से पानी की तरह अन्त: स्पर्श करने, भाव-समर्पण करने वाली अभिव्यक्ति छाया....क्रांतिमय होती है।"[2]

महादेवी वर्मा इस संबंध में लिखती हैं– "सृष्टि के बाह्यकार पर इतना लिखा जा चुका था कि मनुष्य का हृदय अभिव्यक्ति के लिए रो उठा। स्वच्छन्द छन्द में चित्रित उन मानव अनुभूतियों का नाम छाया उपयुक्त ही था और मुझे आज भी उपयुक्त लगता है।"[3]


**© Copyright @ Authors**

आचार्य शुक्ल के अनुसार– "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए- एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका सम्बन्ध काव्यवस्तु से होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन कर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद का दूसरा अर्थ शैली या पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में है।"[4] डॉ. रामकुमार ने भी शुक्ल के समान छायावाद को रहस्यवाद से अभिन्न माना है। इनके शब्दों में– "परमात्मा की छाया आत्मा पर पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में। यही छायावाद है।"[5] श्री शांतिप्रिय द्विवेदी के शब्दों में– "छायावाद एक दार्शनिक अनुभूति है।"[6]

डॉ. नगेन्द्र ने एक ओर तो छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह माना है और दूसरी ओर इसे जीवन के प्रति एक भावात्मक दृष्टिकोण कहा है। डॉ. रामविलास शर्मा का कहना है- "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा वरन् थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामंती साम्राज्यवादी बन्धनों के प्रति विद्रोह रहा है परन्तु वह विद्रोह मध्यवर्ग के तत्वावधान में हुआ था इसलिए उनके साथ मध्यवर्गीय असंगति पराजय और पलायन की भावना भी जुड़ी रही है।"[7] छायावाद के सम्बन्ध में दी गई उपयुक्त परिभाषाओं से अनेक बातें ज्ञात होती हैं जैसे- (1) छायावाद आध्यात्मिक होता है। (2) यह एक पद्धति-विशेष है। (3) छायावाद प्रकृति में मानवीय है। (4) छायावाद एक दार्शनिक अनुभूति है। (5) यह एक भाषात्मक दृष्टिकोण है। (6) यह एक स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। (7) यह एक गीति काव्य है, जिसमें प्रेम और सौन्दर्य का अंकन होता है। (8) इसमें युगानुरूप वेदना की विवृति होती है और यह वाद एक सांस्कृतिक चेतना का परिणाम है। (9) इसमें आधुनिक औद्योगिकता से प्रेरित व्यक्तिवाद है, जिसमें चिंतन और अनुभूति का प्राधान्य है तथा इसमें मानवीय जीवन के नवमूल्यों का अंकन है। (10) यह एक थोपी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामन्ती साम्राज्यवादी बन्धनों के प्रति विद्रोह है। (11) इसका मूलाधार सर्वात्मवाद है।

दो महायुद्धों के बीच की स्वच्छन्दतावाद की कविता को सामान्यतः छायावाद के नाम से अभिहित किया जाता है, किन्तु यह समझना गलत होगा कि प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर सन् 1918 में कविता की यह धारा सहसा फूट पड़ी और द्वितीय महायुद्ध के आरंभ पर अर्थात् 1939 में यह एकदम विलीन हो गई। छायावादी कविता की धारा सन् 18 से पूर्व ही प्रवाहित होने लगी थी और सन् 39 के बाद भी बल्कि आज भी प्रवाहित हो रही है। दो महायुद्धों के बीच की कविता से हमारा तात्पर्य है कि इस अवधि में छायावादी काव्यधारा प्रमुख रुप से रही। "रवीन्द्रनाथ टैगोर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, फकीर मोहन, केशव सुत, भाई वीर सिंह, शंकर कुरुप जैसे भारतीय कवियों में जातीय प्रतिभा के तत्व जज्ब होते गए इनमें भारतीय परम्पराओं के पुरखे ही नहीं बोल उठे, बल्कि कवि का समूचा परिवेश उसकी काव्य-संवेदना में बहकर हाल की ब्याही गाय के थनां में दूध की तरह उतर आया। रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा जयशंकर प्रसाद जैसे कवियों के काव्य में यह प्रक्रिया ज्यादा गहरे स्तरों पर महसूस होती है।"[8]

जयशंकर प्रसाद ने 'आँसू', 'लहर', 'झरना', 'कामायनी' जैसे काव्यों से छायावाद को गहरी सांस्कृतिक परम्पराओं के भारतीय संस्कारों से मंडित कर दिया। उन्होंने न तो अंग्रेजी रोमनी कवियों की ओर लपक दिखाई न बँगला की ओर। वे सीधे प्राचीन संस्कृत काव्य सौन्दर्य और दर्शन की परम्पराओं से जुड़े एकदम मौलिक और गहरे संस्कार के भारतीय कवि हैं। उड़िया में आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी धारा बँगला साहित्य के विशेष प्रभाव के साथ प्रवाहित रही है। उड़िया में फकीर मोहन का काव्य-प्रभाव काफी दूरगामी सिद्ध होता है। फकीर मोहन रामायण-महाभारत का उड़िया में पद्यानुवाद करते हैं तथा 'पुष्पमाला', 'उपहार' जैसी कृतियों से इस साहित्य को नई रंगत


**© Copyright @ Authors**

देते हैं। यही रंगत राधामोहन राय के सृजन में नई छवियों के साथ दृष्टिगत होती है। "असमिया काव्य में आधुनिक स्वच्छन्दतावादी धारा के बीच लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ (1867-1938) में मिलते हैं। वे अपने सुंदर रचनाओं के कारण 'रसराज' भी कहे जाते हैं। इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना 'कृपावरबस काकतर टोपोला' है, जिसमें हास्य व्यंग का मनोरम संसार है।"[9] "उर्दू साहित्य की आधुनिक स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली में सहसा जोर पकड़ती है। गालिब, नासिख, आतिश, नसीम, मोमिन जलाल तथा मुहम्मद हुसैन आजाद की काव्य-परम्परा का हाली द्वारा ही विकास होता है।"[10] "गुजराती काव्य में आधुनिक स्वच्छन्दतावादी धारा ने संस्कृत काव्य के प्रेम सौन्दर्य तथा मध्यकालीन संतों की काव्यधारा से नई शक्ति पाई है। रवीन्द्रनाथ की काव्य-धारा को इन कवियों ने बड़े सम्मान से हृदय में धारण किया है। गुजराती में दलपतराय डाह्या भाई (1820-1898), नर्मदाशंकर 'शंकर' (1833-86), नवल राम, लक्ष्मीराम रणछोड़भाई उदयराम (1838-1920), नंदशंकर तुलजा शंकर (1835-1905) आदि आधुनिक उत्थान युग के कवियों ने जिस काव्य-पंथ को प्रशस्त किया था उसी का बाद में नए-नए रूपों में विस्तार होता रहा।"[11]

हमारा आधुनिक स्वच्छन्दतावादी काव्य स्वाधीनता-संग्राम की गोद में विकसित-फलित होता है। इसलिए इसमें पश्चिमी निराशावादी पलायनवादी नहीं है- संघर्ष और शक्ति का जयघोष है। मूलतः यह सांस्कृतिक पुनर्मूल्यांकन की कविता, जिस स्वाधीनता-संग्राम के दिनों के धार्मिक-राजनीतिक, सुधार-आंदोलनों से प्रेरणा मिली है। इसलिए इसमें लोक-मंगल-चेतना का सौन्दर्य है। तिलक और गाँधी विचार-दर्शन का आशा-उल्लास-उत्साह इसमें आस्थावादी ज्योति जलाए हुए हैं। इसमें कल्पनातिरेक और भावावेग का आग्रह होने पर भी जीवन-संग्राम से पलायन का दर्शन नहीं है। मूलतः यह उत्साह-मंडित, कर्म-सौन्दर्य-परिवर्तित भाव-धारा की कविता है। पश्चिमी रोमांटिक कवियों की भाँति अवसाद-मृत्यु की चादर से फैली-तनी कविता नहीं है।

व्यक्तिवाद की प्रधानता छायावाद की प्रवृत्तियों में रही है। छायावादी कवि को अपने व्यक्तित्व के प्रति अगाध विश्वास था और उसने बड़े उत्साह से काव्य के भाव और कलापक्ष में निज व्यक्तित्व का प्रदर्शन किया। अहंभावना छायावाद की सर्वप्रमुख विशेषता बन गई। इस प्रकार छायावादी काव्य में वैयक्तिक सुख-दुःख की अभिव्यक्ति खुलकर हुई जयशंकर प्रसाद का 'आँसू' तथा पंत जी का 'उच्छवास' और आँसू व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति के सुंदर निदर्शन है।

**"मैंने 'मैं' शैली अपनाई, देखा एक दुःखी निज भाई।**

**दुःख की छाया पड़ी हृदय में, झट उमड़ वेदना आई॥"[12]**

इससे स्पष्ट है कि व्यक्तिगत सुख-दुःखों की अपेक्षा अपने से अन्य के सुख-दुःख की अनुभूति ने ही नए कवियों के भावप्रमाण और कल्पनाशील हृदयों के स्वच्छन्दतावाद की ओर प्रवृत्त किया।

**"मैं भूल गया निज सीमायें जिससे**

**वह छवि मिल गई मुझे।"[13]**

छायावादी कवि ने निजी अनुभूतियों का व्यक्तिकरण प्रकृति के माध्यम से किया है। उदाहरणार्थ- "मैं नीर भरी दुःख की बदली।" नारी के सौन्दर्य एवं प्रेम का चित्रण भी छायावादी कवि के केन्द्र में रहा है।


**© Copyright @ Authors**

भारत में ब्रिटिश राज में पनपने वाले स्वच्छंदतावाद का पुरा रुझान (ठीक से समझने पर) साम्राज्यवाद-विरोधी है। यह ठीक है कि विदेशी शिक्षा प्रयत्नपूर्वक पुराने सृजन-मूल्यों को ध्वस्त कर रही थी और पश्चिमी विचारधाराओं का प्रभाव भी पड़ रहा था। नए मूल्यों, विचार-दृष्टियों आदि के कारण मध्ययुगीन ईश्वरपरक नैतिकता का स्थान मानवपरक नैतिकता ले रही थी। प्रथम महायुद्ध की ज्वाला ने भी हमें नये अनुभव दिया था और हम दासता के बंधनों की मार का अर्थ भी समझ गए थे। परिवेश से जो ललकार उठी थी उसने भारतीय रचनाकार के मानस में नया मंथन पैदा कर दिया था। वह व आत्मालोचन, आत्म-निरीक्षण, आत्म-विश्लेषण, आत्म-उन्मोचन तथा आत्माभिव्यक्ति के लिए विवश था और वह अंतर्मुखी हो गया, उसकी वैयक्तिक अनुभूतियों ने नए शिल्प से नए प्रयोगों में निवास पाया। मानव-मुक्ति की इस व्याकुलता को काव्यात्मक संवेदना में अभिव्यक्त करने वाले काव्य को स्वच्छंदतावाद या कहा उचित ही है। इस भारतीय आधुनिक काव्य की स्वच्छंदतावादी धारा ने नाना रूपों में अपनी व्याकुलता को बँग्ला-मराठी, तमिल, कन्नड़, उर्दू और हिंदी काव्य में व्यक्त किया- हालाँकि इसके प्रथम दर्शन बँग्ला काव्य में माइकेल मधुसूदन दत्त, तरुदत्त तथा रवीन्द्रनाथ के आरंभिक सृजन में हुए। इन्हीं से धीरे-धीरे पूरे भारत ने सृजन-नवजागरण का प्रकाश पाया। इस काव्य की स्वच्छंद भावधारा में विषयिप्रधान (सब्जेक्टिव) अंतर्मुखता के साथ वैयक्तिकता की मूल मनोप्रेरणा थी।

## निष्कर्ष:-

भारतीय काव्य-परंपरा और संस्कृति के स्रोतों से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय कवि नए दृष्टिकोण से वाल्मीकि-कालिदास की प्रकृति को अपलक नेत्रों से देखता रहा और प्रेरित होता रहा। उसके चेतन-अवचेतन का कालिदास ही इस नव्य-सृजन में जाग उठा। बहुत ब्यौरों में न जाकर केवल इतना ही समझने की जरूरत है कि नए स्वच्छंदतावादी कवि का काव्य-उन्मोचन, भावना-कल्पना में न था। वह केवल उसकी नवीन काव्य-संवेदना और दृष्टि में था। फिर उसे एक नया नैतिक सृजन-साहस और संवेदना-दृष्टि देने के लिए वेद-उपनिषद्, बुद्ध, जैन, संत-धारा के साथ तिलक-गांधी का मुक्ति-दर्शन भी मिला था। अरविंद, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद की तेजस्वी चिंतन परंपरा भी थी। दयानंद के चिंतन ने चाहे उसे तगड़ा बोध न दिया हो पर परंपरा का साहस तो दिया ही था। ऐसी स्थिति में हमारा आधुनिक स्वच्छंदतावाद पश्चिमी जूठन का मोहताज न था।

## संदर्भ सूची:-

1. हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिव कुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, पृ.-443
2. वही, पृ.-442
3. वही, पृ.-443
4. वही, पृ.-443
5. वही, पृ.-444
6. वही, पृ.-444
7. वही, पृ.-445
8. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास: सं.- डॉ. नगेन्द्र, पृ.-412


**© Copyright @ Authors**

9. वही, पृ.-421
10. वही, पृ.-422
11. वही, पृ.-423
12. हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिव कुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, पृ.-459
13. वही, पृ.-460


**© Copyright @ Authors**